

machen zu, festsetzen, constituere; act.: यं देवमो कव्यत्राकमदधुरधरेपु
RV. 3,29,7. मित्रमेना दधाम 10,108,3. यद्य सूर्य उच्यति प्रियं तत्रा सृते दध 8,
27,19. मा धुरिन्द्रं नाम देवता जज्ञवः 10,49,2. नाम मे धेहि CAT. Br. 6,1,
3,9. प्रजापतिरिदं सर्वं दधदधतिष्ठति 9,3,4,35. तद्योश्च धत्ता पृथिवी
च देवाः RV. 4,31,11. विश्वं स्वायम् संभूतमन्त्रियाणां यत्सोमिन्द्रो अद-
धाज्ञानाय 3,30,14. med.: (अग्रिमं) देवा धधरे कव्यत्राकम् 7,11,4,17,
6. कानारम् 10,46,8. 10. स्पृशो दधाधे ओषधीषु चित्तु 7,61,3. (अग्रिमं) ले-
पं चतुर्धरे 5,8,6. नामधेयं दधानाः 10,71,1. pass.: तद्वपुषे धायि दर्शनं
देवन्य भर्गः 1,141,1. दधियो धायि सते वयसि 10,46,1. एव वृक्षपति-
वृक्षो धायि देवः 1,190,8. — 7) *machen, schaffen, hervorbringen, zeu-
gen, verursachen; act.:* शतं सकृन्ना भेषजानि धत्तः (वरुणशतभिषजो) TBBr.
3,1,2,9 in Z. f. d. K. d. M. 7,273. य एको ऽवर्णो वरुधा शक्तियोगाद-
र्णाननेकान्नित्तिनार्थो दधाति Cvetāc. Up. 4,1. विन्दुमत्यामधात्रयः । कुरु-
कुत्तममन्वरीषं मुचुकुन्दं च Bāg. P. 9,6,38. कुञ्जलिताननेन दधतो वायुम्
AMAR. 70. med.: इयं विमृष्टिर्नतं आब्रूव पादं वा दधे पादं वा न ob Et-
ner sie schuf oder nicht RV. 10,129,7. फलं धत्ते *hat zur Folge* VARAH.
Brh. S. 11,40. 24,24. मार्कं धत्ते (आगस्त्यः) 12,23. पोषधस्ता (संध्या) ज-
नयदनां धत्ते 46,27 (28). 32,88. वाञ्छितार्थं धत्ते (आग्नेयो ह्याया) 67,93.
68,5,21. 88,7. रोगान् — धत्ते 104,5,34. *thun, unternehmen:* यात्राम-
धाततः RĀGA-TAR. 1,295. — 8) *halten (in der Hand), fassen, tragen,
behalten; med.:* RV. 1,83,9. 82,6. हस्तयोरधिवाः कृष्टीः 6,31,1. वज्रं
वृद्धेर्दधानाः 2,11,4. 4,22,3. प्रान्या तर्हस्तिरते धत्ते अन्या AV. 10,7,
42. नित्यं चित्तु यं सदेनं जग्धे प्रशस्तिभिर्धरे यज्ञियामः RV. 1,148,3.
— यद्यापन् — धत्ते ऽन्यदुर्वकम् BHATT. 4,26. धनुः — दधाने (रघुमिहे)
1,26. दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानाम् *eine Leibesfrucht in sich tragend* CĀK.
79. स्कन्धे नेरा रिक्तघटे दधानः CĀPATI in Z. f. d. K. d. M. 3,389. act.:
प्रदीपशये दधतो कराभ्याम् ebend. करे कृपाणं दधत् VID. 261. दोक्तदल-
ताणां दधौ *eine Leibesfrucht tragen* RAGH. 3,1. (यत्) युवतयः कुसुमं दधुरा-
हितं तदले 9,39. गामधास्यत्कथं नामो मृणालमृदुभिः फणैः KUMĀR.S.
6,68. हृदोपगुह्याममधात् Bāg. P. 4,20,21. *ein Kleid, einen Schmuck
tragen, anlegen:* गुह्याणि वासानि विक्राय तूर्णं तनुनि — धत्ते जनः R. 6,
13. (यः) वस्त्राद्यं च दधात्यङ्गे PĀNĀT. 1,60. दधतो (gen. partic.) मङ्गल-
नौमे RAGH. 12,3. वर्म चान्ये दधुर्दुतम् BHATT. 17,54. दधतम् — अलंकालम्
NALOD. 2,32. *Blüthen tragen* so v. a. *mit Blüthen bedeckt sein:* सपल-
वे पुष्पचयं दधानाः (अशोकाः) R. 6,16. — 9) *tragen* so v. a. *erhalten,
aufrechterhalten:* संपद्भिर्निमयेनौ दधतुर्भुवनद्वयम् RAGH. 1,26. — 10) *an
sich nehmen, empfangen, erlangen, erhalten; med.:* यथा यज्ञं मनुषो वि-
ह्वाऽस्मि दधिधे RV. 4,37,1. अस्माकं स्तोमं धिष्व 8,33,15. 1,10,9. स्वस्ति
धामहि 5,16,5. तोक्म 1,92,13. Namentlich vom *Empfangen der Lei-
besfrucht, concipere* 183,2. यदप्रवीता दधते ह गर्भम् 4,7,9. 10,82,5.
AV. 11,4,3. 1,33,1. CAT. Br. 14,9,4,9. 19. शकुन्तला भरतं दधे 13,5,4,
23. यदा घोषा रेतो धत्ते ऽथ पयो धत्ते 7,1,4,44. pass.: गर्भा धीयन्ते *Leibes-
frucht wird empfangen* AIT. Br. 1,3. प्रजा अधीयन्त VS. 14,28. अन्कन-
धित प्राज्ञनोति यदा वै स्कन्दत्यथ धीयते यदा धीयते ऽथ प्रजापते *er er-
goss sich, wurde empfangen, geboren* CAT. Br. 12,4,4,7. — धत्ते — हरि
विरिञ्चि हेरति संज्ञाः *erhält die Namen* Bāg. P. 1,2,23. auch act.: रा-
ज्ञेत्यधात्रामधेयम् 4,22,56. — 11) *sich zu eigen machen, annehmen* so
v. a. *an sich zur Erscheinung bringen, zeigen; inne haben, besitzen,*

behaupten, halten; med.: वर्षां धधरे RV. 2,34,13. अहं जघन्वा इन्द्र
तविषोमधत्वाः 5,32,2. वयं शविष्ठ वार्यं दिवि अत्रो दधोमहि 33,8,4,
149,1. मयः 3,1,3. सूत्रीयम् 4,36,6. सहेः 5,23,4. वर्षाषि 3,1,8. नत्रम् 38,
5. आयुः 7,80,2. रायः स्वायं धरूणां धियध्वै 34,34. गिरिषु नयं दधे 9,82,
3. यम्यं दधिषे पूर्वपेयम् 7,92,1. देवैः सर्वं दधानाः 10,13,10. शशतो मन्त्रे-
नो दधानान् (अधान) *an welchen Schuld haftet* 2,12,10. त्र्ययं त्र्ययिर्नरो
वनेधत्ता दधे अमृतम् 3,23,1. — नारायणो दधे निद्रां ब्राह्मं वर्षसकृत्कम्
gab sich dem Schlafe hin HARIV. 331. कापालिकमिव व्रतं धत्ते PĀNĀT.
1,239. रक्तनेत्रत्रिशिखो भृकुटिं दधानः 83,3. दधत इव विलासशालिन्य-
म् KIR. 3,32. काचः काञ्चनसंसर्गादहते मार्कतो ह्युतिम् HIT. Pr. 41. स न्य-
स्तचिक्रामपि राजलक्ष्मो तेजोविशेषानामितां दधानः RAGH. 2,7. AMAR. 23.
मानं धत्स्व 67. सोध्यं तेजः प्रतिनवजवापुष्परक्तं दधानः MEGH. 37. BHATT.
3,82. दुःखस्य दुःखं धत्ते सुखे सुखम् SĀH. D. 39,15. हृदि प्रच धत्ते RĀGA-
TAR. 1,228. आमोदम् — दधानः KIR. 3,26. मुदम् VOP. 3,26. अग्र्यं दधाना
BHATT. 2,1,4,17. धैर्यं चाधिपताधिकम् (nach den Scholl. आधिपत) 7,
102. वीर्यं चाधिपताधिकम् (nach den Scholl. आधिपत) 13,109. दधाना
वालिभं मध्यम् 4,16. उपक्राणं धातुमात्मनः so v. a. *einen Tadel auf sich
laden* R. 3,62,26. Auch act.: (कस्मात्) शौचचित्तो न वा दधुः RĀGA-TAR.
5,11. दधति ध्रुवं क्रमत एव न तु प्रथितेजसो ऽपि सकृत्सोपचयम् CĀK. 9,29.
उत्सुकताम् 2. परिमुग्धताम् 32. शितताम् 66. ब्रालाश्रित्यं सातिशयाम्
BHATT. 2,2. धेया धारत्वम् 19,16. उन्नमं दधतो वक्तम् 4,18. नयनकञ्जल-
मिश्रमश्रु — दधतीम् KĀURAP. 40. दधतो मारं भाभिः NALOD. 1,17. दध-
धशिरः CĀK. 9,3. उराजद्वयम् 86. वपुः 10. KIR. 3,5,7. द्विजिह्वद्वनं धत्ते
दुष्टो दुर्जनवज्रगः KĀM. NITIS. 3,20. Für अधायत *besass in der Stelle:*
(धनुः) एतद्वर्षसकृत् तु व्रक्षा पूर्वमधारयत् । ततो ऽनन्तरमेवाय प्रजापति-
रधायत || MBH. 4,1347 ist wohl aller Wahrscheinlichkeit nach अधार-
यत् zu lesen.

— caus. धाययति P. 7,3,36; s. u. अत्तर, अपि, अभि, अच, आ, नि, संनि,
परि, प्र.

— desid. 1) दिधिपति *geben —, verschaffen wollen:* देवाय देवीर्दि-
धिपत्यन्नम् RV. 2,33,5. प्रजावदस्मे दिधिषत् रत्नम् 3,8,6. *belegen —,
beschenken wollen:* सं सानु माग्मि दिधिषामि बिल्मैः 2,33,12. इन्द्रेण मि-
त्रं दिधिषेम गीर्भिः 8,83,6. med. *sich verschaffen wollen, zu gewinnen
suchen:* इन्द्र ओषधं दिधिषत धीतयः RV. 1,132,5. परावतो ये दिधिषत्
आप्यम् 10,63,1. अघो चित्तु यदिधिषामहे वामाभं प्रियं रेकणः पत्यमानाः
132,3. दिवः पयो दिधिषाणां अवेपन् देवाः 114,1. स्तोतारमिदिधिषेय
ich würde zu gewinnen suchen oder ich würde beschenken wollen 7,
32,18. *aufbringen wollen:* इन्द्रस्याव्यं दिधिषत आपः 4,18,7. Vgl. दि-
धिषाय्य, दिधिषु. — 2) धित्सति P. 7,4,54. VOP. 19,9. 12. *setzen —, le-
gen wollen:* स्वं वज्रं कुरु धित्सयः RV. 1,46,9. यमेमाप्राणानालुप्य शी-
र्षन्धित्सत् AIT. Br. 1,17. Vgl. धित्स्य.

— intens. देधायते P. 6,4,66.

— अति *beseitigen:* आयुर्नतं अतिकृतं पृथिः AV. 7,53,3. 18,2,26.

— अधि 1) *setzen, anlegen; aufsetzen (auf's Feuer):* रुद्रा कुम्भयाधि-
हिता AV. 11,3,14. 12,3,30. चरुमधिधाति KĀUR. 2,40. अष्टै वः पेशो
अधि धायि RV. 4,36,7. दिवि न केतुरधि धायि कृत्यः 10,96,4. — 2) *auf
Jmd legen, Jmd verleihen, zutheilen (mit dat. und loc.); act.:* अधि ह-
योरदधा उक्थ्यं वचः RV. 1,83,3. यन्नाष्टदाय अत्रो अय्यर्थतम् 117,8,3.